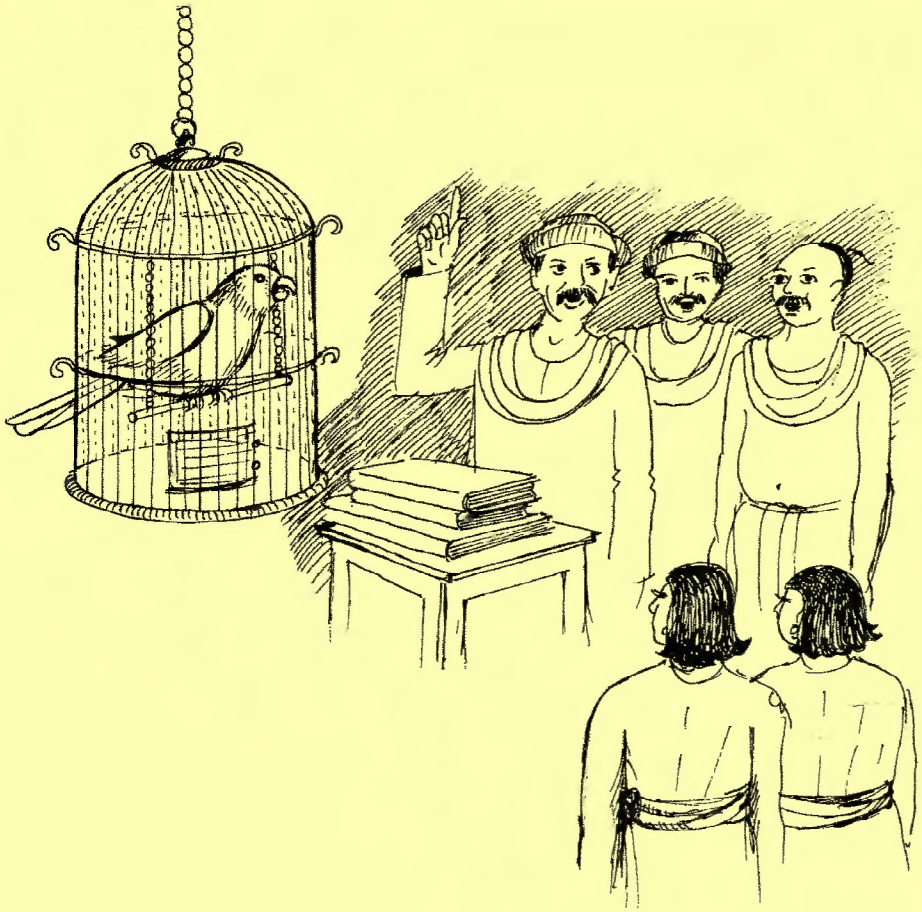

तोता

रवीन्द्रनाथ ठाकुर

तोता : रवीन्द्रनाथ ठाकुर

The Parrot's Training : Rabindranath Tagore

©सर्वाधिकार सुरक्षित,
भारत ज्ञान विज्ञान समिति

रेखांकन : अविनाश देशपांडे
लेजर ग्राफिक्स : अभय कुमार झा

सातवां संस्करण : वर्ष 2007

मूल्य : 10 रुपये

Published by Bharat Gyan Vigyan Samiti
Basement of Y.W.A. Hostel No. II, G-Block Saket , New Delhi - 110017
Phone : 26569943, Fax : 26569773, **Email:** bgvs_delhi@yahoo.co.in, bgvsdelhi@gmail.com
Printed at Sun Shine Offset , New Delhi - 110018

इस किताब का प्रकाशन भारत ज्ञान विज्ञान समिति ने देश भर में चल रहे साक्षरता अभियानों में उपयोग के लिए किया गया है। जनवाचन आंदोलन के तहत प्रकाशित इन किताबों का उद्देश्य गाँव के लोगों और बच्चों में पढ़ने-लिखने की रुचि पैदा करना है।

तन

तोता

एक पक्षी था। वह बड़ा मूर्ख था। गाता तो था, पर शास्त्र नहीं पढ़ता था। फुदकता और उड़ता था मगर यह नहीं जानता था कि कायदा-कानून किसे कहते हैं?

राजा ने कहा, ''ऐसा पक्षी किस काम का? जंगल के फल खाकर जो शाही फल-बाज़ार में नुकसान पहुंचाए।''

मंत्री को बुलाकर आदेश दिया, ''इस पक्षी को शिक्षा दो।''

और उस पक्षी को शिक्षा देने का जिम्मा सौंपा गया-राजा के भानजों को।

पंडितों की सभा जुटी। जमकर विचार-विमर्श हुआ। बड़ी ज्वलंत समस्या थी, ''उस पक्षी की अशिक्षा का कारण क्या है?'' इस बात पर खूब बहस हुई।

बड़े-बड़े पंडितों ने चर्चा में हिस्सा लिया। सभी ने एक स्वर में कहा, ''यह पक्षी छोटा सा घोंसला बनाता है। वह इतना छोटा है कि उसमें विद्या जैसी भारी-भरकम चीज़ रखने की जगह ही कहां है? इसलिए सबसे पहली ज़रूरत यह है—इस पक्षी के लिए एक शानदार पिंजरे का निर्माण किया जाए।''

राजपंडितों का सुझाव एकदम अनूठा था। उन्हें अपार दक्षिणा मिली और वे बेइंतहा खुश होकर अपने-अपने घर लौट गए।

सुनार बैठा पिंजरा बनाने। पिंजरा ऐसा अद्‌भुत बना कि देश-विदेश के लोग उसे देखने के लिए टूट पड़े।

सौंदर्य के पारखी जो थे! किसी ने कहा, ''शिक्षा की तो हद हो गई!'' किसी ने कहा, ''शिक्षा न भी तो क्या, पिंजरा तो बन ही गया। पक्षी के भाग्य का सब चमत्कार है?''

सुनार को थैलियां भर-भर कर बख्शीश मिली।

पंडितगण बैठे पक्षी को विद्या सिखाने। नसवार लेकर कहने लगे, ''थोड़ी पोथियों से काम नहीं चलेगा। पक्षी को पढ़ाना क्या कोई मामूली बात है?''

आज्ञाकारी भानजे तो बस आज्ञा का ही इंतज़ार कर रहे थे। तत्काल पोथी लिखने वालों को बुलाया गया। वे भी आज्ञाकारी कम नहीं थे। फौरन पोथियों की नकल का काम शुरू हो गया। फिर नकलों की भी नकल। नकल-दर-नकल। देखते-देखते पोथियों का पहाड़ खड़ा हो गया।

जिसने भी देखा उसने गला फुलाकर प्रशंसा की, ''शाबाश! शाबाश! विद्या रखने की अब जगह की कहां है?''

नकल-नवीसों को पारितोषक मिला-बैलगाड़ियां भर-भर कर। बैलों ने घर की ओर मुंह किया और दौड़ पड़े। किसी के घर में कोई कमी नहीं रही।

बेशकीमती पिंजरे की चौकसी के लिए भानजों को बहुत चिंता सता रही थी। एक तरफ चिंता और दूसरी ओर व्यस्तता।

उनके ज़िम्मे बहुत से काम थे-सफाई का काम। मरम्मत का काम। काम ही काम। लाजवाब सलीके से, बेहद करीने से। पिंजरे की झाड़-पोंछ व चमचमाती पालिश देखने के बाद लोगों ने कहा, ''उन्नति हो रही है।''

बड़ा काम ज़्यादा आदमियों से ही सम्पन्न होता है, सो उस बड़े काम के लिए दिन-ब-दिन आदमियों की संख्या बढ़ती रही। फिर आदमियों के काम की देख-रेख के लिए और ज़्यादा आदमी बढ़ाए गए। वे हर महीने मोटी-मोटी तनख्वाह लेकर भारी-भारी रजिस्टर भरने लगे, सो भरते ही गए।

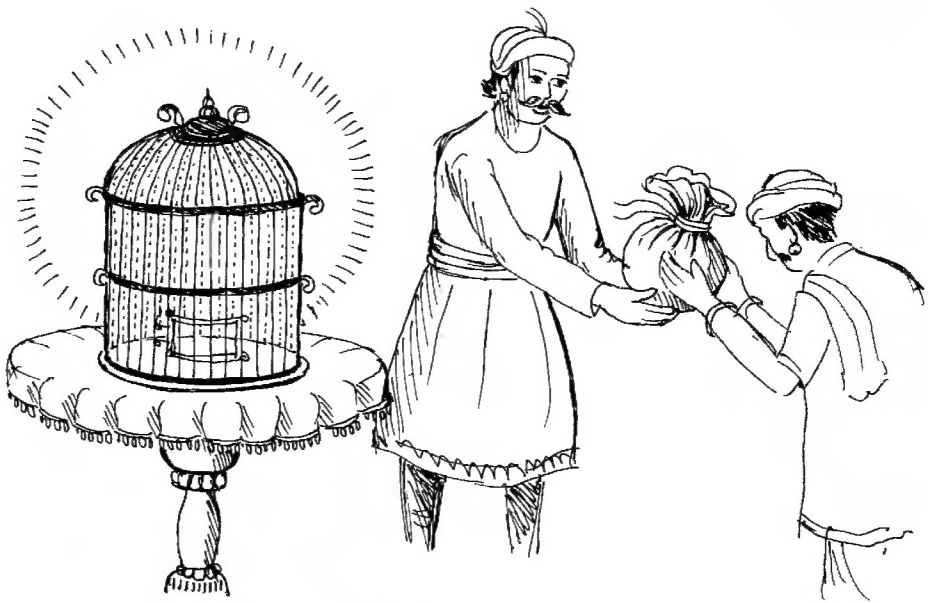

सभी लोगों के ममेरे, चचेरे व मौसेरे भाई हवेली और कोठियों में गद्दे बिछाकर आराम से बैठ गए!

संसार में कई तरह के अभाव हैं पर टीका-टिप्पणी करने वाले निंदकों की कमी नहीं है। निंदक बेशुमार हैं। ज़रूरत से ज़्यादा। उन्होंने कहा, ''पिंजरे की तो उन्नति हो रही है, मगर पक्षी की देख-भाल करने वाला कोई नहीं है।''

राजा के कानों में भनक पड़ी। उन्होंने सबसे अधिक ज़िम्मेदार भानजे को बुलाकर कहा ''मेरे राज-दुलारे, यह क्या बात सुन रहा हूं?''

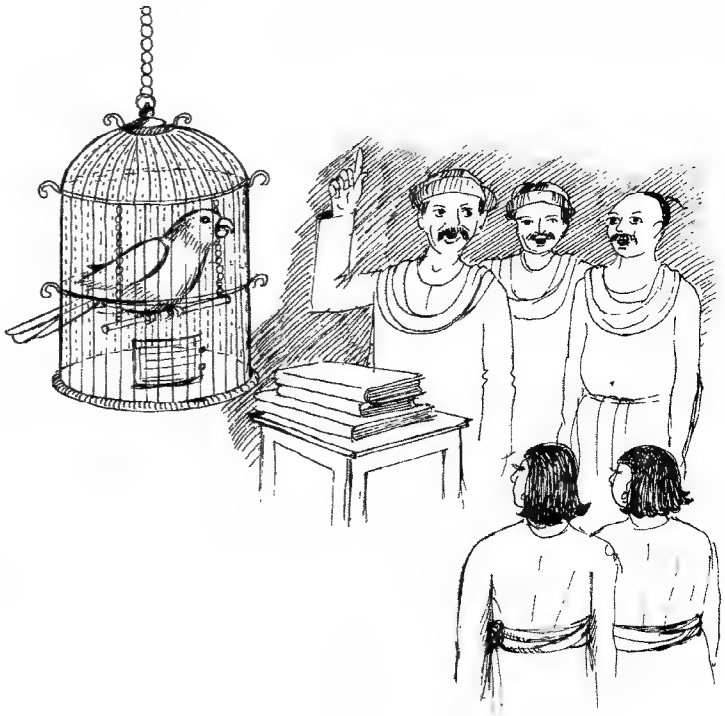

भानजे ने सहज भाव से निवेदन किया, ''महराज, आप तो ईश्वर की तरह सब कुछ जानते हैं। फिर भी अगर आप सच्चाई का पता लगाना चाहते हैं तो बुलवाईए सुनारों को, पंडितों को, नकल-नवीसों को, बुलवाइए मरम्मत करने वालों को, बुलवाइए चौकसी करने वालों को। निठल्ले निंदकों के पास और काम ही क्या है? उन्हें खाने को नहीं मिलता इसलिए निंदा करते हैं।''

जवाब सुनकर राजा ने स्थिति का ज़ायजा लिया, गहराई से समझा और अंत में भानजे के गले में सोने का बहुमूल्य हार पहना दिया।

शिक्षा कितनी तेज़ी से चल रही है, उसकी असलियत जानने के लिए राजा की इच्छा हुई कि स्वयं अपनी नज़रों से छान-बीन करें।

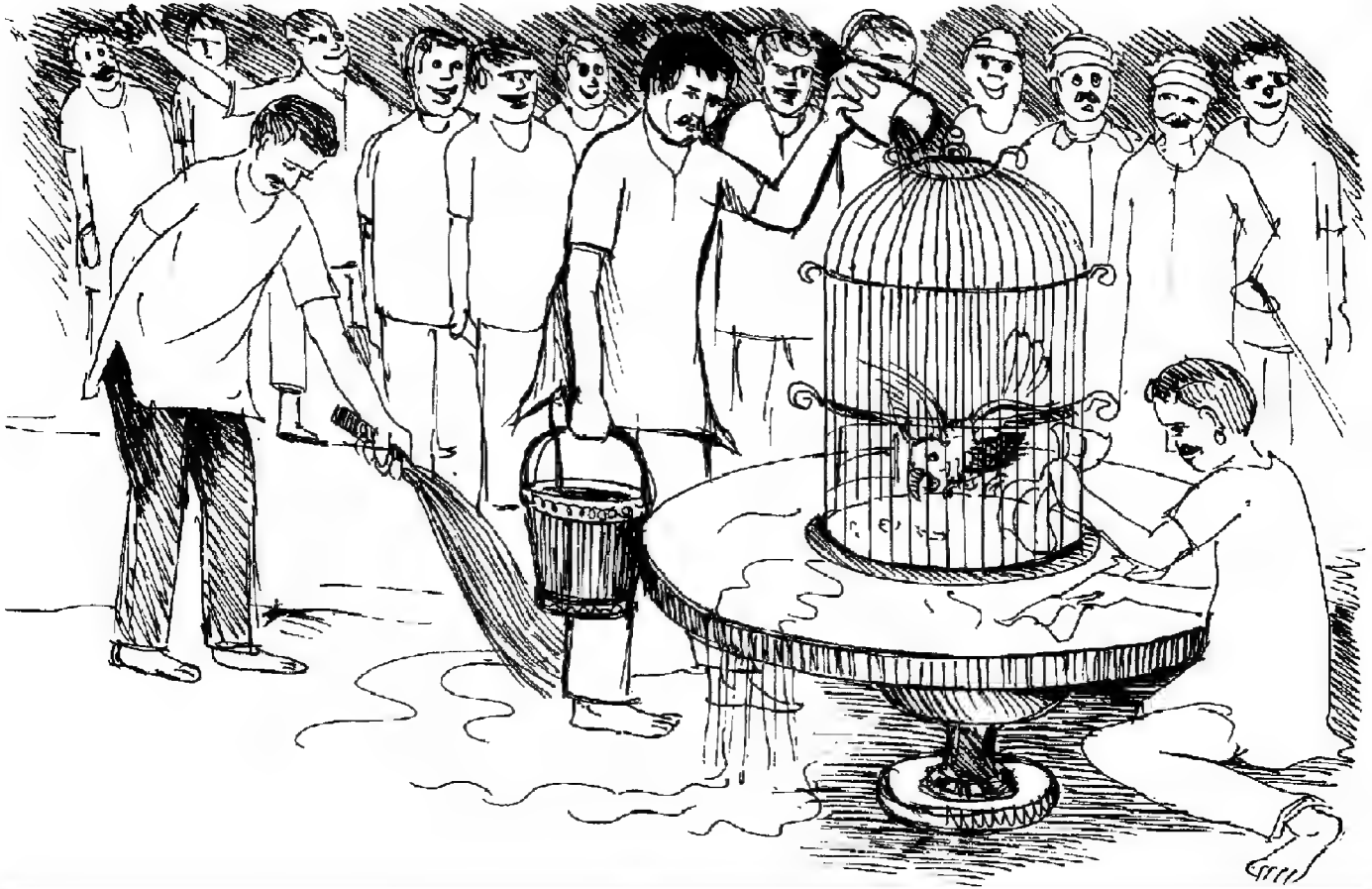

इसलिए एक दिन वह अपने एक विश्वस्त मंत्री, दीवान और मित्रों के साथ विद्याशाला का मुआयना करने गए।

उनके दर्शन होते ही ड्योढ़ी के पास बज उठे— शंख, घड़ियाल, ठाक, ढोल, तासे, तुरही, नगाड़े, कांसे, बंशी, मृदंग, खोल और करताल। पंडितगण गला फाड़-फाड़ कर चुटिया हिला-हिला कर मंत्र पाठ करने लगे। मिस्त्री, मजदूर, सुनार, नकल-नवीस, पहरेदार और उन सबके बीच ममरे, चचेरे, व मौसेरे भाई बुलंद स्वर में जय-जयकार करने लगे।

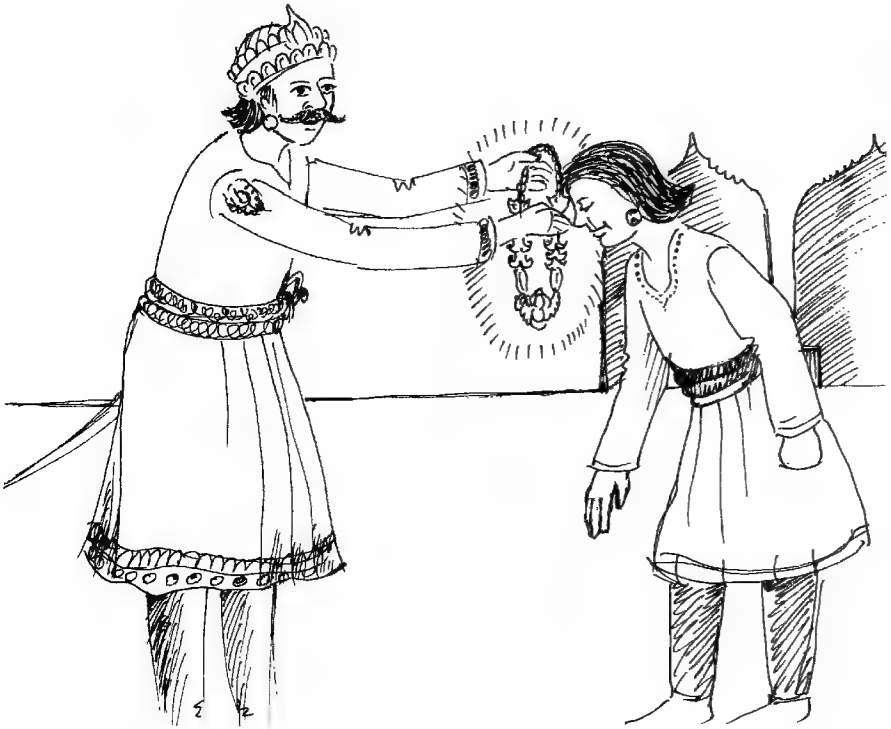

बड़ा भानजा बोला, ''महाराज गौर फरमाइये, सारा तामझाम आंखों के सामने है। कुछ भी छिपा नहीं रह सकता, फिर आपकी आंख तो पर्वत को भी भेद कर साफ देख सकती है।''

महराज बेहद खुश होकर लौट पड़े। ड्योढ़ी को पार करने के बाद हाथी पर सवार होने वाले ही थे कि झुरमुट की ओट में दुबका निंदक बोल उठा, ''हुजूर आपने पक्षी को देखा कि नहीं?''

पहले तो महराजा कुछ चौंके फिर अपने आपको सम्भालते हुए बोले, ''अरे, यह तो मैं भूल ही गया। पक्षी को देखने का ध्यान ही नहीं रहा।''

लौटकर पंडितों से पूछा, ''पक्षी को तुम लोग कैसे सिखाते हो, क्या सिखाते हो? ज़रा उसे देखने की इच्छा हो रही है।''

राजा की इच्छानुसार उन्हें सब कुछ दिखाया गया और वह देख कर बेइन्तहा खुश हुए। परन्तु पक्षी को सिखाने का तामझाम इतना बड़ा था, कि पक्षी स्वयं कहीं नज़र ही नहीं आ रहा था। राजा ने भी सोचा अब उसे देखने की ज़रूरत ही क्या है? राजा बुद्धिमान था, वह तुरंत ताड़ गया कि बन्दोबस्त में किसी तरह की कोई कमी नहीं है।

पिंजरे में न दाना था न पानी था। थी केवल विद्या की भरमार। ढेर सारी पोथियों के ढेर सारे पन्ने, फाड़-फाड़ कर कलम की नोक से पक्षी के मुंह में ठूंसे जा रहे थे। गाना तो बंद ही था। चीखने चिल्लाने की भी कोई गुंजाइश नहीं थी। देखने मात्र से ही रोम-रोम सिहर उठता था।

इस बार राजा ने हाथी पर चढ़ते समय 'कन-उमेठी' सरदार को आदेश दिया कि वह निंदक के दोनों कानों को अच्छी तरह खींच दे।

पक्षी दिन-ब-दिन, पढ़े लिखे लोगों के व्यवहार के कारण, अधमरी स्थिति में पहुंच गया। लोग समझ गए कि प्रगति काफी आशाजनक है। परंतु पक्षी की अपनी प्रकृति थी। पक्षी पूर्व दिशा में सूर्य के उजाले की ओर टुकर-टुकर देखता और ढीठ की तरह जंगली तरीके से अपने

पंख फड़फड़ाता। इतना ही नहीं, कभी-कभार यह भी देखने में आया कि वह अपनी चोंच की नोंक से अमूल्य पिंजरे की छड़े काटने की चेष्टा करता है।

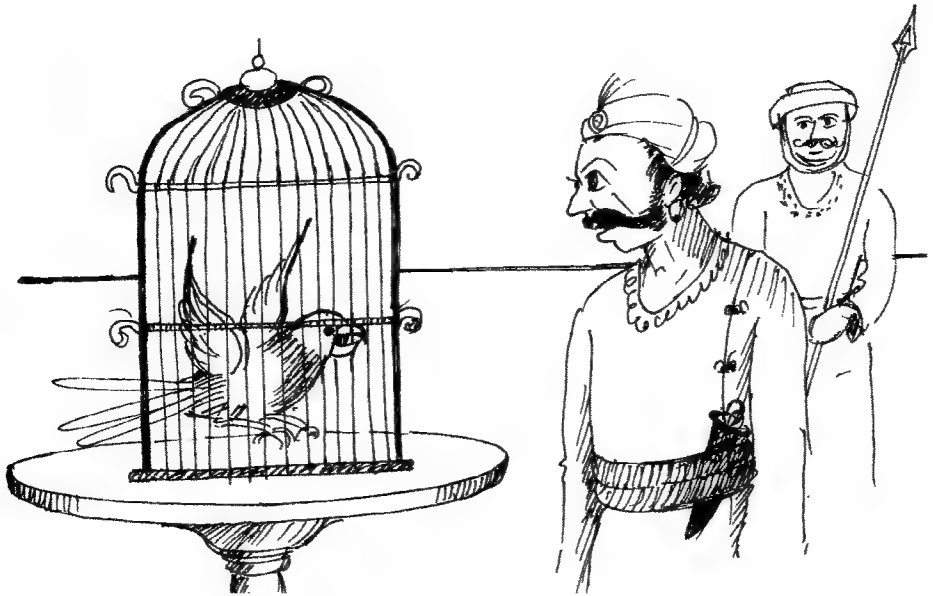

पहरे पर लगे कोतवाल ने जब यह देखा तो वह भृकुटी तान कर चिल्लाया, ''यह कैसी गुस्ताखी है?''

तब विद्याशाला—यानि पक्षी के स्कूल में छेनी-हथौड़ा लेकर लुहार हाजिर हुआ। फिर ठकाठक और धमाधम का उम्दा संगीत शुरू हुआ। और देखते ही देखते लोहे की जंजीर तैयार हो गई। फिर देखते-देखते पक्षी के पंख भी काट दिए गए।

राजा के तुनक-मिजाज संबंधियों ने हंडिया सा मुंह बनाकर, सिर हिलाते कहा, ''इस राज्य के पक्षियों की बात न पूछो। अक्ल तो उनमें थी ही नहीं। परंतु अब तो कृतज्ञता भी नहीं रही।''

लुहार की आमदनी दिन-ब-दिन बढ़ती गई और लुहारिन की देह पर सोने के जेवर जगमगाने लगे। कोतवाल की लाजवाब होशियारी देख कर राजा ने उसे बड़ा ईनाम दिया।

पक्षी मर गया। कब मरा, किसी भी इतिहासकार को उसकी सही तिथि का पता नहीं चला। नासपीटे निंदक प्रचार करने लगे, ''पक्षी तो मर गया।''

राजा ने सबसे बड़े भानजे को बुलाकर पूछा, ''राजा बेटे, यह मैं क्या सुन रहा हूं?''

भानजे ने हाथ जोड़ कर विनती की, ''महाराज, पक्षी की शिक्षा संपूर्ण हुई।''

राजा ने पूछा, ''अब भी फुदकता है?''

भानजे ने खींसे निपोर कर कहा, ''अजी, राम भजो।''

''उड़ता है?''

''ना!''

''गाता है?''

''ना।''

राजा ने कहा, ''एक बार पक्षी को लाकर दिखाओ।''

पक्षी आया। साथ में कोतवाल, प्यादे और घुड़सवार।

राजा ने उंगली से पक्षी को दबाया।

न उसके मुंह से हां-हुं हुई, न हल्की सी सिसकी ही निकली और न उसकी पंख-विहिन देह में कोई हरकत हुई। केवल उसके पेट में पोथियों के सूखे पन्ने खरखराहट सी करने लगे।

बाहर, नये वसंत की दक्खिनी बयार में सारी कलियों, सारे फूलों ने एक गहरी आंह भरी।

□□□□

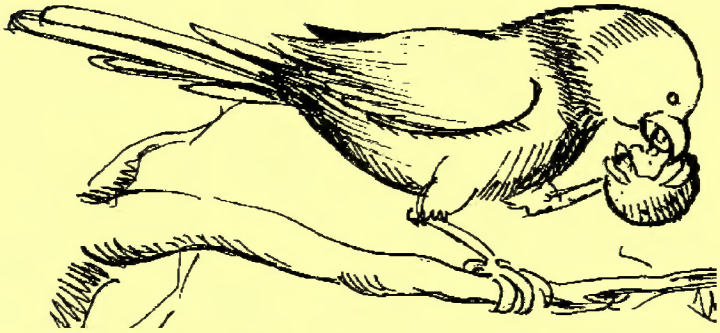

शिक्षा के नाम पर स्कूलों में, लाखों-करोड़ों बच्चों की सृजना को, रोज़ाना कुचला जाता है। शिक्षा के नाम पर पाठ को रटना और उन्हीं शब्दों में इम्तहान में उलटी कर देना, यही काम हमारे दिग्गज शिक्षाविद कर रहे हैं। नोबेल पुरस्कार विजेता का शिक्षा की स्थिति पर एक सटीक और पैना व्यंग जो आपकी अंतड़ियों को झकझोर देगा।

भारत ज्ञान विज्ञान समिति

मूल्य : 10 रुपये

B - 16

Price: 10 Rupees